Regd.with the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg.No.GDP-41/2017-19

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

Annual Subscriptioon: Rs-210/-
(Per Issue: Rs-20/-
Weight: 50-100gms/Issue

फ़रवरी 2021 ई०

मज्लिस अंसारुल्लाह कालीकट (राज्य केरल) की तरफ़ से मुश्तरका श्रमदान के बाद एक ग्रुप फ़ोटो

मज्लिस अंसारुल्लाह कालीकट (केरल राज्य) की तरफ़ से मुश्तरका श्रमदान का एक द्रुश्य

मज्लिस अंसारुल्लाह चिन्ताकुंटा (तेलंगाना राज्य) की तरफ़ से आयोजित इज्लास हफ़्ता क़ुरआने मजीद का एक द्रुश्य

मज्लिस अंसारुल्लाह चिन्ताकुंटा (तेलंगाना राज्य) की तरफ़ से आयोजित इज्लास हफ़्ता क़ुरआने मजीद के स्टेज का एक द्रुश्य

तरबियती इज्लास मज्लिस अंसारुल्लाह
नरार भीटा (आसाम राज्य) का एक दृश्य

तरबियती इज्लास मज्लिस अंसारुल्लाह
अभयपुरी (आसाम राज्य) का एक दृश्य

25.1.2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह
इब्राहिमपूर (जिला मुर्शिदाबाद, बंगाल राज्य)
के पिकनिक में खाना खाते हुए

25.1.2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह
इब्राहिमपूर (जिला मुर्शिदाबाद, बंगाल राज्य)
के पिकनिक का एक दृश्य

10.1.2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना
(बिहार राज्य) की तरफ़ से 160 ग़रीबों में कम्बल
तक़सीम करते हुए जनाब शाह महमूद साहब

14.1.2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह अहमदाबाद
(गुजरात राज्य) के मीटिंग का एक दृश्य

بسم الله الرحمن الرحيم نحمده ونصلي على رسوله الكريم وعلى عبده المسيح الموعود

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورة الصف آيت ١٥

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 **फरवरी 2021** **Issue - 2**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय -हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का विशाल हृदय	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन सारे संसार में मज्लिस अन्सारुल्लाह के सुखद फल ।	6
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की एक दिलचस्प हिकायत	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَا أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ

(सूर: अल-बलद : आयत 2 से 5)

अनुवाद: सावधान! मैं इस शहर की कसम खाता हूं। जब कि तू इस शहर में एक दिन उतरने वाला है और पिता की और जो उस ने पैदा किया है। अवश्य हम ने इन्सान को एक निरन्तर मेहनत में रहने के लिए पैदा किया।

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اِلَى الْاَرْضِ، فَيَتَزَوَّجُ، وَيُوْلَدُ لَهٗ۔ وَيَمْكُثُ خَمْسًا وَّاَرْبَعِيْنَ ثُمَّ يَمُوْتُ فَيُدْفَنُ مَعِيَ فِيْ قَبْرِيْ فَاَقُوْمُ اَنَا وَعِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ فِيْ قَبْرٍ وَّاحِدٍ بَيْنَ اَبِيْ وَعُمَرَ

(मिश्कात किताबुल फित्न बाब नुज़ूल ईसा इब्न मर्यम)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिवस्सलम ने फरमाया: ईसा इब्न मर्यम धरती की तरफ नाज़िल होंगो और वह शादी करेगा और उस के यहां सन्तान होगी। वह धरती पर 45 वर्ष रहेगा फिर जब उस का देहान्त होगा तो मेरी कब्र में मेरे साथ दफन होगा। फिर मैं और ईसा इब्न मर्यम , अबू बकर रज़ि और उमर रज़ि के मध्य एक ही कब्र से उठेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

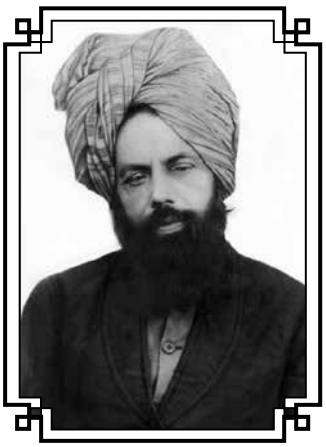

मुस्लेह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 20 फरवरी 1886 ई को एक इश्तेहार प्रकाशित किया। जिस में मुस्लेह मौऊद के बारे में एक महान भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानुहू व अ़ज़्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इ़ज़्ज़त वाला है। मुझको अपने इलहाम (वाणी) से संबोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुशखबरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात्(मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء

अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो।

जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ूदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।

(इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886, पृ. 3)

सम्पादकीय

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का विशाल हृदय

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला के बारे में "मुस्लेह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी" में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम को ख़ुशख़बरी दी कि "वह सम्मान तथा महानता एवं दौलत वाला होगा।"

आप के व्यक्तित्व में यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत सम्पूर्ण हुई। हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरह आप भी किसी से कोई व्यक्तगित शत्रुता न रखते थे बल्कि अवसर आने पर सख़्त से सख़्त विरोधियों से न केवल क्षमा का व्यवहार करते थे बल्कि हमदर्दी तथा उपकार से पेश आते थे। आप फ़रमाते हैं

"मैं मानता हूँ कि मतभेद सम्पूर्ण रूप से मिट नहीं सकता परन्तु मेरे दिल में कभी किसी हिन्दु,सिख या ईसाई के लिए नफ़रत पैदा नहीं हुई। इस मामला में यहां तक तैयार हूँ कि अपने बच्चों के सिर पर हाथ रख कर कसम खा कर कह सकता हूँ कि मैं ने कभी किसी हिन्दू,सिख को नफ़रत की दृष्टि से नहीं देखा मेरी उम्र इस समय 47 साल है परन्तु इस में से एक दृष्टि भी ऐसा नहीं गुज़री जिसमें मेरे दिल में किसी व्यक्ति के बारे में दुश्मनी की भावनाएं पैदा हुई हों।"

(अलफ़ज़ल 26 फरवरी 1936 पृष्ठ 4)

आप के विशाल हृदय की परीधि बहुत व्यापक थी। अत: एक बार आपने आर्यों को मस्जिद अक़सा कादियान में जलसा करने की आज्ञा दी और उन्होंने जलसा आयोजित किया।

(11 जून 1936 ई पृष्ठ 6)

आप ने यह परामर्श फ़रमाया कि आर्या साहिबान अपने बीस छात्र या कम से कम जितने उचित समझें हमारे पास भेज दें उनका ख़र्च हम बर्दाश्त करेंगे और उनको क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाएँगे इस के मुक़ाबला में आर्या साहिबान हमारे सिर्फ दो आदमियों को संस्कृत पढ़ा दें। और वेदों का माहिर बना दें और उनका ख़र्च भी हमारे ज़िम्मा होगा। परन्तु अफ़सोस आर्या साहिबों से आज तक इस तरफ़ ध्यान नहीं हो सका।

(तारीख़ अहमदियत भाग 4 सफ़ा 266)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि जमाअत अहमदिया के इमाम होने की हैसियत से ख़ुद मुस्लमानों के विरोध का भी शिकार हुए। अहरार ने आप को और जमाअत को नुक़्सान पहुंचाने में कोई अवसर हाथ से न जाने दिया। लेकिन मुहब्बत अल्लाह के लिए और शत्रुता अल्लाह के लिए के अधीन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के विशाल हृदय के कारण से जमाअत अहमदिया के कट्टर विरोधी मौलवी ज़फ़र अली ख़ान साहब जब सैंटर्ल असैंबली के मैंबर चुने गए तो जमाअत के वोट डाले गए। इतना नहीं बल्कि 1956 ई में जब मौलवी साहब पक्षघात का शिकार हुए तो मरी में निवास के दौरान आप ने साहिबज़ादा डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहिब को भिजवाकर न सिर्फ ईलाज करवाया बल्कि ईलाज के लिए कुछ रक़म और दवाइयां भी भिजवाईं।

(सवानह फ़ज़ले उमर भाग 5 पृष्ठ 121)

जमाअत अहमदिया के एक कट्टर विरोधी आदरणीय ख़लीफ़ा शुजाउद्दीन जब आप से मिलने

के लिए रब्वह आए तो आप ने हज़रत उम्मे नासिर को फ़रमाया कि

"रसूलुल्लाह (स) ने मेहमान की बड़ी इज़्ज़त रखी है। वह गालियां देकर अपने अख़लाक़ का प्रदर्शन करते हैं ,मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चल कर अपने अख़लाक़ का प्रदर्शन किया है।" (वही पृष्ठ 122)

आप अपने कलाम में फ़रमाते हैं

निकाला जिसने मुझे मेरे चमन से
मैं उस का भी दिल से भला चाहता हूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम काम करने वाले हों केवल जलसा मुस्लेह मौऊद मनाने वाले ही न हों। इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया में फैलाने वाले हों और केवल इसी बात पर ख़ुश न हो जाएं कि हम जलसे मना रहे हैं। हक़ीक़ी तौर पर हम इस मिशन को आगे बढ़ाने वाले हों, इस काम को आगे बढ़ाने वाले हों जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा था और जिसके लिए आपने बेशुमार भविष्यवाणिया भी फ़रमाईं और मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी भी उन में से एक भविष्यवाणी है।"

(ख़ुतबा जुमा 21-फरवरी 2020 ई)

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

सारे संसार में मज्लिस अन्सारुल्लाह के सुखद फल

क़ुरआन करीम से पता चलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों को भी अल्लाह तआला ने अन्सारुल्लाह क़रार दिया। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक दौर में मुहाजरीन को पनाह देने वाले मदीना के मुस्लमानों को भी अन्सार का नाम दिया गया था। ज़माने के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन में सिल्सिला अहमदिया के ख़ुद्दाम का गिरोह क़ायम हुआ।

मज्लिस अन्सारुल्लाह का पहला युग

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने एक रोया के आधार पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की आज्ञा से सिल्सिला की तरक़्क़ी के लिए एक अन्जुमन स्थापित की। जिसका नाम दुआओं और इस्तिख़ारा के बाद अन्जुमन अन्सारुल्लाह रखा गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने "मन अन्सारी इलल्लाह " के नाम से एक निबन्ध प्रकाशित किया। (अख़बार बदर 23 फरवरी 1911 ई) जिस पर ख़ुद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने फ़रमाया कि "मैं भी आप के अन्सार में शामिल हों" मानो इस अंजुमन के सबसे पहले मेम्बर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल बने। शिक्षा तथा तरबियत के साथ तब्लीग़ के कामों की तरफ बहुत ध्यान दिया गया। 1912 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने यह इच्छा प्रकट की थी कि लन्दन में जमाअत अहमदिया का मिशन स्थापित हो। जिस पर अन्जुमन ने रक़म उपल्बध की और ख़लीफतुल मसीह ने चौधरी फतह मुहम्मद स्याल साहिब को लन्दन भिजवाया। फिर शेख अब्दुर्हमान नौ मुस्लिम साहिब और सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहिब को तालीम तथा तब्लीग़ के लिए मिस्र भिजवाए गए। 1913 ई में अन्जुमन की तब्लीग़ से दो तीन सौ आदमी जमाअत अहमदिया में दाख़िल हुए। ख़लीफ़तुल मसीह की इजाज़त से हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक स्कीम तैयार की और फ़रमाया।

"बड़े बड़े जंगल एक माचिस से जल सकते हैं परन्तु दिलों के गर्म करने के लिए दुनिया ने कोई सामान आविष्कार नहीं किया जिससे काम लेकर मैं तुम्हारे दिलों में गर्मी पैदा कर दूं। दिलों का फेरना ख़ुदा तआला के अधिकार में है और इस से दुआ कर के मैंने स्कीम शुरू की।"

(अलफ़ज़ल 21 जनवरी 1914 ई स्वानेह फ़ज़ले उम्र भाग 1 पृष्ठ 305)

हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़िलाफ़त पर आसीन होने के बाद सारी जमाअत को ही इस तरीक़ा पर चलाने लगे जिसके कारण से यह अन्जुमन स्थापित न रही।

मज्लिस अन्सारुल्लाह का दूसरा युग

27 दिसम्बर 1926 ई को जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने दोबारा अन्जुमन अन्सारुल्लाह का ऐलान फ़रमाया। जिसका बुनियादी उद्देश्य नई नस्ल की तर्बीयत, लोगों में धर्म की सेवा की भावना उभारना और भविष्य में उन्हें ज़िम्मेदारियों को सँभालने के योग्य बनाना था। मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब अनवर की डायरी के अनुसार 5 नवम्बर 1926 ई से 23 अप्रैल 1928 ई होने वाले (32) इज्लासों में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सुनहरे उपदेशों से नवाज़ते रहे। एक बार फ़रमाया

"सच्चाई की क़ीमत आदमी की क़ीमत से ज़्यादा है। सच्चा मुस्लमान जान क़ुर्बान करेगा लेकिन सच्चाई

क़ुर्बान नहीं करेगा। अहमदियत भी एक उच्च स्तर की की सच्चाई है।"

(तारीख़ अन्सारुल्लाह प्रकाशन 1978 ई लाहौर)

मज्लिस अन्सारुल्लाह का तीसरा युग

मज्लिस अन्सारुल्लाह का तीसरा दौर वह है जब अन्य ज़ैली तन्ज़ीमों की स्थापना के बाद 26 जुलाई 1940 ई को ख़ुत्बा जुम्अ: में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस का ऐलान फ़रमाया। जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज सारी दुनिया में सीधा ख़लीफ़ा वक़्त की निगरानी में काम करते हुए तालीम, तर्बीयत तब्लीग़ , मानव सेवा जैसे समस्त विभागों में ख़लीफ़तुलमसीह के अपदेशों की रोशनी में महान सुखद फल ला रहा है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"क्या हमारी कथ्नी तथा करनी बराबर हैं, नहनो अन्सारुल्लाह अर्थात हम अल्लाह के अन्सार हैं का दावा हमारे कर्म से प्रमाणित है या नहीं? हम इस्लाम को दुनिया में फैलाने का दावा करते हैं। इस को पूरा करने के लिए हमारी अपनी कोशिश और हालत क्या है यह देखने की ज़रूरत है।"

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 03 दिसम्बर 2019 ई)

सम्मान्नीय अन्सारुल्लाह के सदस्यो! आज हमें भी इस बात की ज़रूरत है कि ख़लीफ़तुल मसीह के मुबारक उपदेश के अनुसार अपनी समीक्षा करते हुए मज्लिस अन्सारुल्लाह की स्थापना के उद्देश्यों को पूरा करने में भरपूर परिश्रम करें और अपनी आने वाली नस्ल को अहमदिया ख़िलाफ़त और जमाअथ के निज़ाम से जोड़ने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201
Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की हुई एक दिलचस्प हिकायत सुनकर एक वकील का शराब की आदत छोड़ना।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ि (हयात क़ुदसी भाग 3)

हज़रत मुंशी अहमद दीन साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो गुजरांवाला (पंजाब) में अपील नवीस थे। वह दरअसल गांव बुल्ले वाल ज़िला गुजरांवाला के रहने वाले थे बाद में गुजरांवाला में रहने लगे। बहुत मुख़लिस और ज्ञान वाले अहमदी दोस्त थे। उनकी एक बड़ी लाइब्रेरी भी थी जिसकी बहुत सी किताबें बाद में कादियान की लाइब्रेरी में भी शामिल की गईं। आप एक समय तक हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ां साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो आफ़ मालेरकोटला के यहाँ भी नौकर रहे। मुंशी साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो 1905 ई में एक बार सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़यारत के लिए कादियान हाज़िर हुए। हज़रत अक़दस उन दिनों बाग़ में रह रहे थे और हुज़ूर का यह तुच्छ ग़ुलाम भी वहीं बाग़ में हुज़ूर के क़दमों में हाज़िर था और हज़रत मौलाना हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से तिब्ब की कुछ किताबें भी पढ़ा करता था। मुंशी साहिब रज़ि आपने साथ अपने एक ग़ैर अहमदी वकील दोस्त को भी गुजरांवाला से लाए। इन का यह दोस्त शराब पीने की आदत का बुरी तरह शिकार थे और इतनी प्रचुरता से शराब पीते थे कि उन का किसी वक़्त का खाना भी बिना शराब पीने की न होता था। मुंशी साहिब रज़ि ने एक लंबे अरसा तक अपने इस दोस्त की आदत बद छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन सफलता न हुई वकील साहिब उनको यही कहते कि इतने लंबे अरसा से यह आदत मेरे अंदर दृढ़ हो चुकी है कि अब उस का छोड़ना मेरी हिम्मत और ताक़त से बाहर है। मुंशी साहिब रज़ि इस ख़्याल से कि कादियान में हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम और दूसरे बुज़ुर्गों की दुआ तथा बरकत से शायद वह इस बुरी आदत को छोड़ सकें उनको कादियान लाए थे।

उन दिनों बाग़ में हज़रत मौलाना हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब ओ क़ुरआन क़रीम का दर्स भी देते थे अत: जब हज़रत मौलवी साहिब रज़ि नमाज़ अस्र के बाद दर्स देने लगे तो मुंशी साहिब ने निवेदन किया कि मैं अपने साथ एक ग़ैर अहमदी दोस्त को भी लाया हूँ। उन को शराब पीने की पुरानी आदत है इह दर्स में शराब पीने की हानियां और नुक़्सानों पर भी विस्तार से प्रकाश डालें। हो सकता है कि यह दोस्त आपकी नसीहत और ध्यान से इस आदत को छोड़ने में सफल हो सकें संयोग से दर्स भी आयत يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ रुकू से शुरू होना था। अत: हज़रत हकीमुल उम्मत रज़ि ने शराब की हानियों और नुक़्सानों को पूरे विस्तार से वर्णन फ़रमाया और रुहानी, अख़लाक़ी, आर्थिक ,सभ्यचारिक और तिब्बी दृष्टियों से इस मस्ला पर बहुत उम्दगी से प्राकश डाला। हज़रत का दर्स बहुत ही प्रभावकारी और लाभदायक था।

जब दर्स ख़त्म हुआ तो मुंशी साहिब रज़ि ने अपने वकील दोस्त से जो दरस में बैठा हुआ था पूछा कि क्या आप को भी इस दर्स से कोई लाभ पहुंचा है। उसने जवाब दिया कि शराब की बुराइयों में जो कुछ मैंने आज हज़रत अल्लामा की ज़बान से सुना है वाक़ई इस से पहले मेरे सुनने में नहीं आया और मुझ पर स्पष्ट हो गया है कि शराब बीना बहुत नुक़्सान दायक और कष्टदायक है लेकिन जब मैंने अपने नफ़्स से इस बारे में पूछा तो उस को इस पुरानी आदत के छोड़ने के लिए तत्पर नहीं पाया।

छुटती नहीं हे मुंह से यह काफ़िर लगी हुई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम से मुलाक़ात

मुंशी साहिब रज़ि अपने दोस्त के इस इन्कार को सुनकर बहुत ही दुखी हुए उस के बाद जब वह गुजरांवाला वापस जाने लगे तो उन्होंने अपने वकील दोस्त से कहा कि चलिए जाते हुए हज़रत अक़दस सय्यदना मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम से आज्ञा प्राप्त कर लें और दर्शन भी करते जाएं। हुज़ूर अक़दस एक ख़ेमा में ठहरे हुए थे। ख़ादिमा के द्वारा अपने हाज़िर होने की हुज़ूर को सूचना भिजवाई हुज़ूर अक़्दस आ ने सूचना मिलने पर अन्दर बुला लिया और अपने क़रीब पलंग पर बिठाया। यह ख़ुदा तआला के अदभुत भेदों में से है कि बिना

मुंशी साहिब रज़ि के कुछ निवेदन करने के और अपने दोस्त की हालत वर्णन करने के हुज़ूर अक़्दस ने दृढ़ संकल्प और मज़बूत हौंसले की एक हिकायत वर्णन करनी शुरू कर दी और फ़रमाया कि इन्सान के अंदर बहुत सी कमज़ोरियाँ पाई जाती हैं। जिनके कारण से वह विभिन्न दोषों और गुनाहों में पीड़ित हो जाता है। लेकिन चूँकि ख़ुदा तआला की तरफ़ से इन्सान को पवित्र दिया गया है और उस को दृढ़ संकल्प और मज़बूत हौंसला भी प्रदान किया गया है इस लिए अगर इन्सान इस से काम ले तो वह इन दोषों और गुनाहों से नजात प्राप्त कर लेता है

एक दिलचस्प हिकायत

अत: हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम ने बतौर उदाहरण स्वरूप एक हिकायत बयान फ़रमाई कि एक बादशाह को मिट्टी खाने की आदत पड़ गई और वह मिट्टी से इतना मानूस हो गया कि हर समय उस की प्रशंसा करने लगा दरबार के अमीरों और वज़ीरों ने भी जब बादशाह की तबीयत का रुझान देखा तो बादशाह का नौकर होने के कारण मिट्टी की प्रशंसा करने लग पड़े। बादशाह ने कहा कुछ लोग मिट्टी खाने को हानिकारक ख़्याल करते हैं। लेकिन हमें तो इस में कुछ बुराई या नुकसा मालूम नहीं होता। इस पर वज़ीरों और दूसरे दरबारियों ने निवेदन किया कि बादशाह सलामत लोग यूंही इसके नुक़्सान बताते हैं। उनको क्या पता है कि मिट्टी में क्या क्या खज़ाने और आश्चर्य पाए जाते हैं। आख़िर सब इन्सानों की ख़ुराकें और बाग़ मिट्टी से ही बनते हैं और इन्सान जो सर्वोत्तम सृष्टि है वह भी मिट्टी से ही पैदा किया गया है। फिर मिट्टी नुक़्सान देने वाली कैसे हो सकती है। बादशाह दरबारियों की मिट्टी के बारे में ऐसी प्रशंसाओं को सुनकर मिट्टी खाने की आदत में और भी दृढ़ हो गया। जब मिट्टी के प्रयोग पर बादशाह को एक ज़माना गुज़र गया तो उस के बुरे नतीजे प्रकट होने शुरू हुए। जिगर ख़ून पैदा करने से रह गया। पेट की हज़म की शक्ति में अन्तर आ गया चेहरा पर बेरौनक़ी और मसूड़ों और ज़बान पर ख़ून की कमी के निशान प्रकट हो गए। चलते वक़्त सांस फूलना शुरू हो गया। इन निशानों के स्पष्ट होने पर बादशाह ने फिर दरबार में वर्णन किया कि मैंने मिट्टी खाने की आदत धारण की थी। लेकिन मैंने मिट्टी को क्या खाया मिट्टी ने मुझे ख़ा लिया है और जो जो बीमारियां और नुक़्सान उस को हुए थे वे ब्यान किए इस पर दरबारियोंने जो दरअसल "राजा के ग़ुलाम थे न कि बैंगन के" मिट्टी का तिस्तकार शुरू कर दिया और इस मैं विभिन्न प्रकार की अतिश्योक्ति से काम लिया। किसी ने कहा कि मिट्टी जैसी घृणित चीज़ और क्या हो सकती है। जिस पर समस्त सृष्टि का मल गिरता है। किसी ने कहा कि सब लोगों के जूते जिस पर हर रोज़ पड़ें वह चीज़ भी कुछ प्रशंसा के योग्य हो सकती है। इस तर जिस दरबारी के ख़्याल में जो भी घृणा का विाचार आया इस के बारे में कह डाला।

बादशाह ने कहा अब पिछली बातों को रहने दो और मेरी सेहत के ठीक करने के लिए कोई तजवीज़ तथा प्रबन्ध करो। अत: सारे देश से चुने हुए उत्बा और डाक्टरों को जिनकी संख्या दर्जनों थी बादशाह के ईलाज के लिए जमा किए गए और ईलाज शुरू हुआ। बादशाह ने सब मुआलिजों को कहा कि ईलाज शुरू करने से पहले मेरी एक शर्त है कि चूँकि मिट्टी खाने की आदत मेरे अन्दर दृढ़ हो चुकी है और इस को मैं छोड़ नहीं सकता। इस लिए ऐसा ईलाज किया जाए कि बिना किसी नसीहत के और बिना किसी परहेज़ कराने के दवा और ख़ुराक़ के इस्तिमाल से ही मिट्टी की आदत छूट जाए और मिट्टी से नफ़रत पैदा हो जाए। अत: ईलाज शुरू हुआ और एक अरसा तक होता रहा। लेकिन न ही बादशाह मिट्टी खाने से रुका और न ही कोई दवा और ख़ुराक इस आदत को छोड़ने के लिए लाभदायक हो सकी।

कामयाब ईलाज

एक ज़माना के बाद कोई पर्यटक बादशाह के शहर में आ निकला और संयोग से बादशाह के हकीमों और मुआलिजों के निवास पर आ गया। जब उसने बादशाह के बहुत अधिक बीमार और इतना लंबा समय तक असफल ईलाज के बारे में सुना तो बहुत अफ़सोस किया और कहा कि ईलाज तो बहुत आसान है। लेकिन हकीमों ने यूँही इतना लंबा समय लगाया है। इस पर्यटक की यह बात अफ़्वाह साके शहर में फैल गई। यहां तक कि बादशाह और इस के दरबारियों तक भी जा पहुंची। दूसरे दिन जब बादशाह दरबार में आया तो उस ने इस का ज़िक्र अपने वज़ीरों तथा अमीरों के सामने किया। सब ने कहा कि हम ने भी यह बात सुनी है अत: बादशाह ने हुक्म दिया कि इस पर्यटक को बुलाया जाए जब

वह पर्यटक शाही दरबार में हाज़िर हुआ तो बादशाह ने उसे सम्बोधित करके कहा कि ऐसी ऐसी बात सुनने में आई है क्या यह ठीक है। इस पर्यटक ने निवेदन किया कि हाँ यह ठीक है और मैं आपका सफल ईलाज बहुत ही कम समय में कर सकता हूँ। उस के बाद उसने कहा कि क्या आप अपना ईलाज अभी सब के समाने कराना चाहते हैं या अकेले में ? यह सुनकर बादशाह कुछ शंकित हुआ और उसने सोचा कि सब के सामने ईलाज की अवस्था में हो सकता है कि कोई ऐसी बात घटित हो जाए आपमान का कारण हो। इस लिए उसने कहा कि मैं ईलाज एकान्त में कराऊँगा। अत: उचित जगह और वक़्त पर जो ईलाज के लिए चुना गया वह पर्यटक पहुंच गया। और बादशाह से निवेदन किया कि इस वक़्त ईलाज के तौर पर जो परामर्श मैं आपकी सेवा में पेश करूँगा अगर वह आप मान लेंगे तो अवश्य आप बीमारी से शीघ्र ठीक हो जाऐंगे। बादशाह ने कहा कि आप कहिए मैं इस पर अनुकरण करने की कोशिश करूँगा। पर्यटक ने कहा कि अपनी बादशाहत को छोड़ दो। बादशाह इस तजवीज़ से हैरान हुआ और इस का कारण पूछा। पर्यटक ने निवेदन किया कि बादशाहों को बादशाहों से मुक़ाबले और लड़ाईयां भी करना पड़ती हैं। अत: आप ख़ुद ही बताएं कि जब आप इस तुच्छ और अपमानित मिट्टी का जो रोज़ाना पांव और जूतों के नीचे रौंदी जाती है मुक़ाबला नहीं कर सकते और इस से पराजित हो रहे हैं तो जब आपका मुक़ाबला किसी ज़बरदस्त लश्कर से होगा तो उस के मुक़ाबला पर आप किस तरह कामयाब हो सकेंगे? यह विश्वसनीय बात है कि आप हार कर न सिर्फ अपनी बादशाहत से हाथ धो बैठेंगे बल्कि अपनी इज़्ज़त और जान भी गंवाएँगे। अत: क्या यह बेहतर नहीं कि आप अभी हुकूमत से अलग होकर किसी अधिक उचित आदमी को तख़्त पर बैठने का अवसर दें। हाँ अगर हुकूमत करने का इरादा है तो फिर बादशाहों का इरादा आप में कहां है?) यह शब्द कह कर पर्यटक ने बादशाह के छुपे हुए दृढ़ इरादा को जगाया। अत: बादशाह ने निहायत जोश, दृढ़ता और प्रताप से फ़रमाया-وَاللّٰہِ لَا اٰکُلُ الطِّیْنَ بَعْدَ ذَالِکَ اَبَدًا۔ अर्थात ख़ुदा की क़सम मैं अब कभी मिट्टी न खाऊंगा और उसने मिट्टी खाना हमेशा के लिए छोड़ दिया।

इस के बाद बादशाह जब दरबार में आया तो उसने ज़िक्र किया कि मैंने मिट्टी खानी छोड़ दी है। दरबारी इस फ़ौरी तबदीली और ईलाज से बेहद आश्चयचकित हुए तो बादशाह ने कहा कि ईलाज तो दरअसल हमारे अपने अंदर ही फ़ितरी तौर पर मौजूद था। केवल सही तौर पर तहरीक की ज़रूरत थी जो पर्यटक साहिब ने कर दी और हमारी शक्ति और दृढ़ निश्चय को उभार दिया।

जब हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने यह हिकायत वर्णन फ़रमाई तो वकील साहिब पर हुज़ूर की तवज्जा और बरकत से इस हिकायत का ऐसा प्रभाव हुआ कि वह फ़ौरन बोल उठे कि हुज़ूर आज से में भी अपने इरादा और निश्चय से शराब पीने से तौबा करता हूँ। हुज़ूर मेरे लिए दुआएं फ़रमाएं कि ख़ुदा तआला मुझे इस तौबा पर दृढ़ता प्रदान करे। हज़रत मुंशी साहिब रज़ि ने वर्णन किया कि हज़रत अल्लामा मौलाना नूरुद्दीन साहिब से तो मैंने वाज़िह तौर पर अपने दोस्त के शराब पीने का वर्णन कर के नसीहत की दरख़ास्त की थी। लेकिन हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम से इस बारे में इशारा से भी कुछ वर्णन न किया था लेकिन हमारे हाज़िर होते ही हुज़ूर ने वह बात बयान फ़रमाई जो हज़ारों नसीहतों और उपदेशों से भी हुज़ूर की तवज्जा और क़ुव्वत क़ुदसिया से बढ़कर प्रभावकारी साबित हुई और मेरे दोस्त को इस बुरी आदत से तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई। फ़ल्हमदो लिल्लाह ज़ालिक।

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम वकील साहिब की तौबा से बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि इन्सानी फ़ितरत गुनाहों का ज़हर खाने कितनी ही गन्दा क्यों न हो जाए उस के अंदर ही ख़ुदा तआला ने इस ज़हर की दवा भी रखी हुई है जिस तरह पानी आग की गर्मी से चाहे कितना गर्म हो जाए और जोश से उबलने लगे फिर भी वह बहुत अधिक गर्म पानी जब भड़कने वाली आग पर पड़ता है तो उस को बुझा देता है क्योंकि पानी में गर्मी का प्रभाव पैदा हो जाना उस की फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। यही हाल इन्सानी फ़ित्रत का है कि शैतान जो आग से है चाहता है कि इन्सान को भी गुनाहों में पीड़ित करके आग वाला बना दे। लेकिन इन्सान की क़ुव्वत इरादी उस की फ़ितरत के वास्तविक तत्व को जो पवित्र है उभारने में कामयाब हो जाती है इस के बाद हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और विदा किया।